



# Ansh

28 Jul 2023

03:57 PM

Dumraon

Model: Web-MyKundli

Order No: 121458201

## सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग \_\_\_\_\_: पुल्लिंग  
जन्म तिथि \_\_\_\_\_: 28/07/2023  
दिन \_\_\_\_\_: शुक्रवार  
जन्म समय \_\_\_\_\_: 15:57:00 घंटे  
इष्ट \_\_\_\_\_: 26:37:40 घटी  
स्थान \_\_\_\_\_: Dumraon  
राज्य \_\_\_\_\_: Bihar  
देश \_\_\_\_\_: India

अक्षांश \_\_\_\_\_: 25:33:00 उत्तर  
रेखांश \_\_\_\_\_: 84:09:00 पूर्व  
मध्य रेखांश \_\_\_\_\_: 82:30:00 पूर्व  
स्थानिक संस्कार \_\_\_\_\_: 00:06:36 घंटे  
ग्रीष्म संस्कार \_\_\_\_\_: 00:00:00 घंटे  
स्थानिक समय \_\_\_\_\_: 16:03:36 घंटे  
वेलान्तर \_\_\_\_\_: -00:06:32 घंटे  
साम्पातिक काल \_\_\_\_\_: 12:26:56 घंटे  
सूर्योदय \_\_\_\_\_: 05:17:56 घंटे  
सूर्यास्त \_\_\_\_\_: 18:41:25 घंटे  
दिनमान \_\_\_\_\_: 13:23:29 घंटे  
सूर्य स्थिति(अयन) \_\_\_\_\_: दक्षिणायन  
सूर्य स्थिति(गोल) \_\_\_\_\_: उत्तर  
ऋतु \_\_\_\_\_: वर्षा  
सूर्य के अंश \_\_\_\_\_: 10:56:03 कर्क  
लग्न के अंश \_\_\_\_\_: 01:03:45 धनु

#### अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति \_\_\_\_\_: धनु - गुरु  
राशि-स्वामी \_\_\_\_\_: वृश्चिक - मंगल  
नक्षत्र-चरण \_\_\_\_\_: अनुराधा - 3  
नक्षत्र स्वामी \_\_\_\_\_: शनि  
योग \_\_\_\_\_: ब्रह्म  
करण \_\_\_\_\_: वणिज  
गण \_\_\_\_\_: देव  
योनि \_\_\_\_\_: मृग  
नाड़ी \_\_\_\_\_: मध्य  
वर्ण \_\_\_\_\_: विप्र  
वश्य \_\_\_\_\_: कीटक  
वर्ग \_\_\_\_\_: सर्प  
युँजा \_\_\_\_\_: मध्य  
हंसक \_\_\_\_\_: जल  
जन्म नामाक्षर \_\_\_\_\_: नू-नूर  
पाया(राशि-नक्षत्र) \_\_\_\_\_: लौह - ताम्र  
सूर्य राशि(पाश्चात्य) \_\_\_\_\_: सिंह

## पंचांग

दादा का नाम \_\_\_\_\_ :  
पिता का नाम \_\_\_\_\_ :  
माता का नाम \_\_\_\_\_ :  
जाति \_\_\_\_\_ :  
गोत्र \_\_\_\_\_ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1945	श्रावण	6
पंजाबी	संवत : 2080	श्रावण	13
बंगाली	सन् : 1430	श्रावण	11
तमिल	संवत : 2080	आदी	12
केरल	कोल्लम : 1198	कर्कदम	12
नेपाली	संवत : 2080	श्रावण	12
चैत्रादि	संवत : 2080	श्रावण	शुक्ल 10
कार्तिकादि	संवत : 2080	श्रावण	शुक्ल 10

### पंचांग

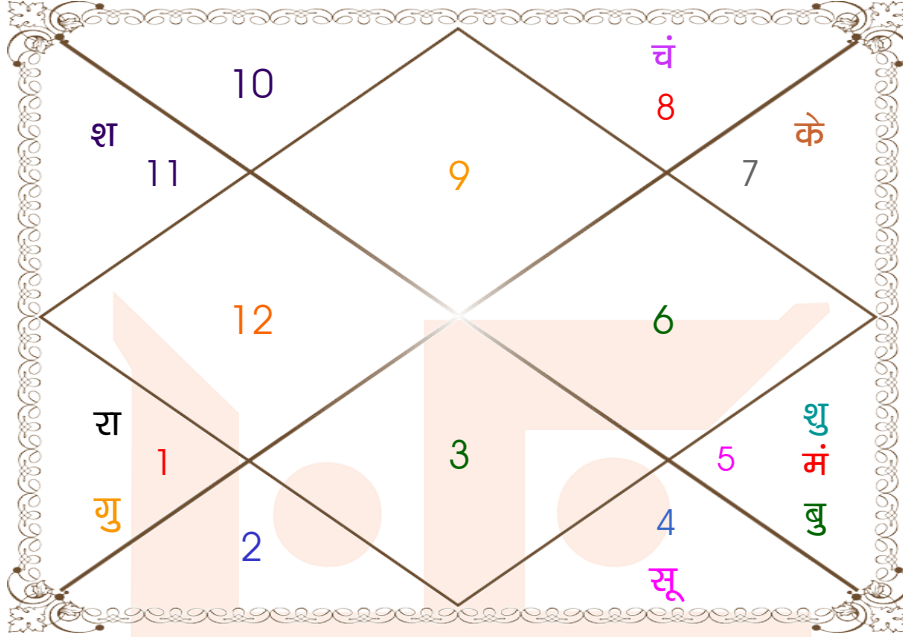
सूर्योदय कालीन तिथि \_\_\_\_\_ : 10  
तिथि समाप्ति काल \_\_\_\_\_ : 14:51:42  
जन्म तिथि \_\_\_\_\_ : 11  
सूर्योदय कालीन नक्षत्र \_\_\_\_\_ : अनुराधा  
नक्षत्र समाप्ति काल \_\_\_\_\_ : 24:55:08 घंटे  
जन्म योग \_\_\_\_\_ : अनुराधा  
सूर्योदय कालीन योग \_\_\_\_\_ : शुक्ल  
योग समाप्ति काल \_\_\_\_\_ : 11:56:00 घंटे  
जन्म योग \_\_\_\_\_ : ब्रह्म  
सूर्योदय कालीन करण \_\_\_\_\_ : गर  
करण समाप्ति काल \_\_\_\_\_ : 14:51:42 घंटे  
जन्म करण \_\_\_\_\_ : वणिज  
भयात \_\_\_\_\_ : 36:12:36  
भभोग \_\_\_\_\_ : 58:37:55  
भोग्य दशा काल \_\_\_\_\_ : शनि 7 वर्ष 4 मा 4 दि

### घात चक्र

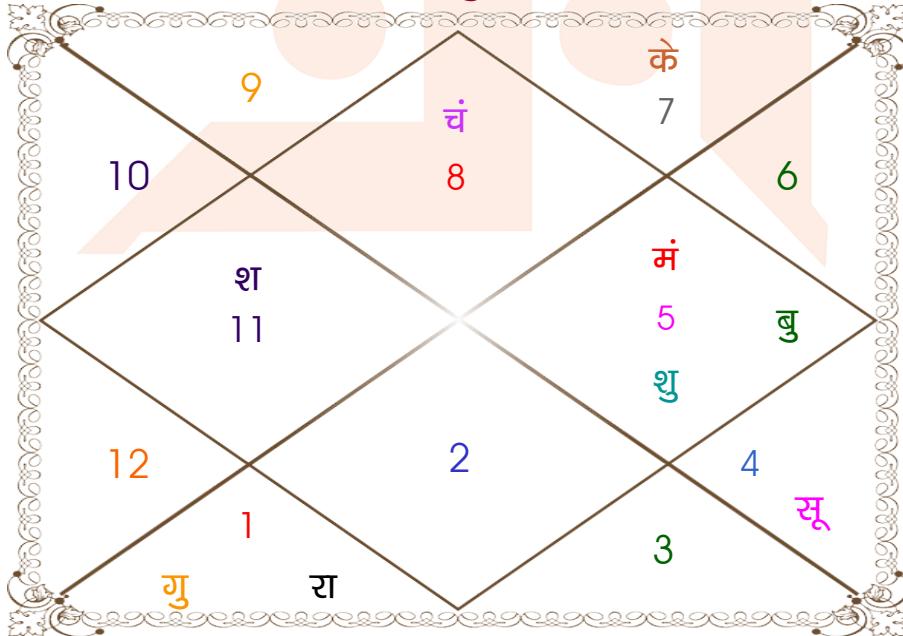
मास \_\_\_\_\_ : आश्विन  
तिथि \_\_\_\_\_ : 1-6-11  
दिन \_\_\_\_\_ : शुक्रवार  
नक्षत्र \_\_\_\_\_ : रेवती  
योग \_\_\_\_\_ : व्यतिपात  
करण \_\_\_\_\_ : गर  
प्रहर \_\_\_\_\_ : 1  
वर्ग \_\_\_\_\_ : गरुड़  
लग्न \_\_\_\_\_ : वृश्चिक  
सूर्य \_\_\_\_\_ : मकर  
चन्द्र \_\_\_\_\_ : वृष  
मंगल \_\_\_\_\_ : कुम्भ  
बुध \_\_\_\_\_ : वृश्चिक  
गुरु \_\_\_\_\_ : मीन  
शुक्र \_\_\_\_\_ : मेष  
शनि \_\_\_\_\_ : कर्क  
राहु \_\_\_\_\_ : वृष

# जन्म कुण्डली

## लग्न कुण्डली



## चन्द्र कुण्डली



## लग्न कुण्डली और दशा

### लग्न कुण्डली

	रा गु		
श			सू
			शु मं बु
ल	चं	के	

### लग्न कुण्डली

	रा गु		
			श
	सू		
बु शु	मं	के	ल चं

विंशोत्तरी  
शनि 7वर्ष 4मा 4दि  
शनि

28/07/2023

03/12/2131

शनि	01/12/2030
बुध	02/12/2047
केतु	01/12/2054
शुक्र	01/12/2074
सूर्य	01/12/2080
चन्द्र	01/12/2090
मंगल	01/12/2097
राहु	03/12/2115
गुरु	03/12/2131

योगिनी

भ्रामरी 1वर्ष 6मा 16दि  
भद्रिका

12/02/2025

12/02/2030

भद्रिका	24/10/2025
उल्का	24/08/2026
सिद्धा	14/08/2027
संकटा	23/09/2028
मंगला	13/11/2028
पिंगला	22/02/2029
धान्या	24/07/2029
भ्रामरी	12/02/2030

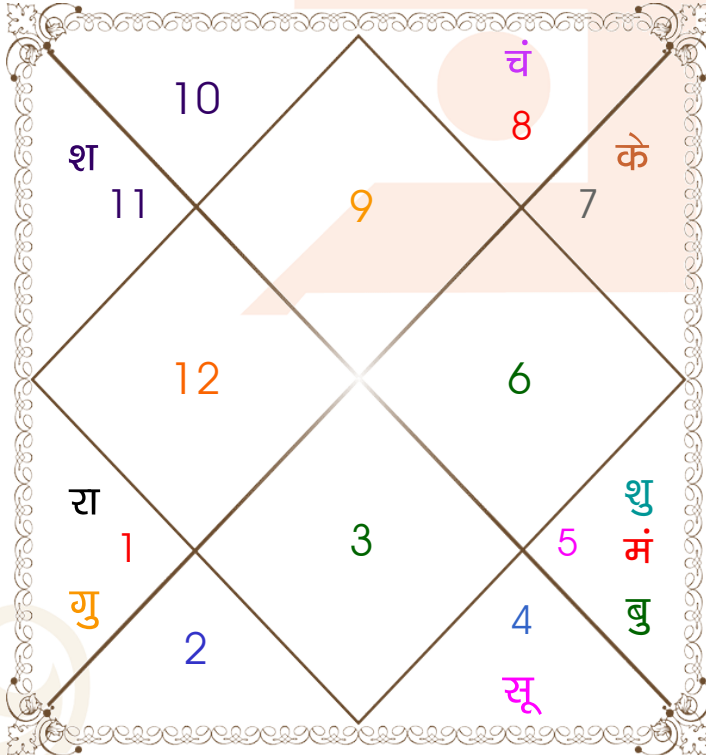
## ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			धनु	01:03:45	325:35:14	मूल	1	19	गुरु	केतु	शुक्र	---
सूर्य			कर्क	10:56:03	00:57:20	पुष्य	3	8	चंद्र	शनि	सूर्य	मित्र राशि
चंद्र			वृश्चि	11:30:42	13:42:02	अनुराधा	3	17	मंगल	शनि	चंद्र	नीच राशि
मंगल			सिंह	16:50:12	00:37:12	पूर्वाषाढा	2	11	सूर्य	शुक्र	चंद्र	मित्र राशि
बुध			सिंह	05:09:37	01:25:45	मघा	2	10	सूर्य	केतु	मंगल	मित्र राशि
गुरु			मेष	19:06:18	00:06:53	भरणी	2	2	मंगल	शुक्र	राहु	मित्र राशि
शुक्र	व		सिंह	03:50:58	00:12:48	मघा	2	10	सूर्य	केतु	चंद्र	शत्रु राशि
शनि	व		कुंभ	11:44:42	00:03:32	शतभिषा	2	24	शनि	राहु	शनि	मूलत्रिकोण
राहु	व		मेष	04:48:30	00:03:38	अश्विनी	2	1	मंगल	केतु	मंगल	शत्रु राशि
केतु	व		तुला	04:48:30	00:03:38	चित्रा	4	14	शुक्र	मंगल	शुक्र	सम राशि
हर्ष			मेष	28:28:41	00:01:32	कृतिका	1	3	मंगल	सूर्य	मंगल	---
नेप	व		मीन	03:18:11	00:00:51	पूर्वाभाद्रपद	4	25	गुरु	गुरु	राहु	---
प्लूटो	व		मक	04:47:34	00:01:25	उत्तराषाढा	3	21	शनि	सूर्य	शनि	---
दशम भाव			कन्या	13:08:55	--	हस्त	--	13	बुध	चंद्र	राहु	--

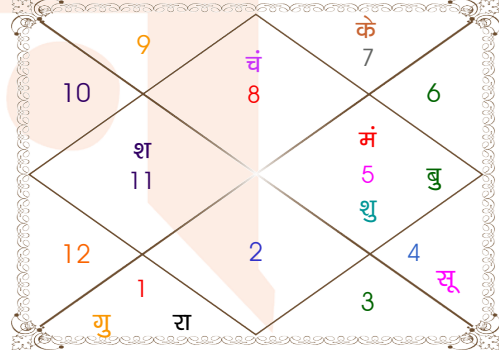
व - वकी स - स्थिर  
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त  
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 24:11:03

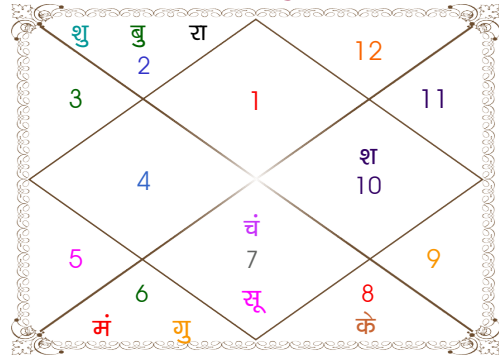
### लग्न-चलित



### चन्द्र कुंडली



### नवमांश कुंडली



## चलित तथा निरयण भाव चलित

### चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	वृश्चिक 18:04:37	धनु 01:03:45
2	धनु 18:04:37	मकर 05:05:28
3	मकर 22:06:20	कुम्भ 09:07:11
4	कुम्भ 26:08:03	मीन 13:08:55
5	मीन 26:08:03	मेष 09:07:11
6	मेष 22:06:20	वृष 05:05:28
7	वृष 18:04:37	मिथुन 01:03:45
8	मिथुन 18:04:37	कर्क 05:05:28
9	कर्क 22:06:20	सिंह 09:07:11
10	सिंह 26:08:03	कन्या 13:08:55
11	कन्या 26:08:03	तुला 09:07:11
12	तुला 22:06:20	वृश्चिक 05:05:28

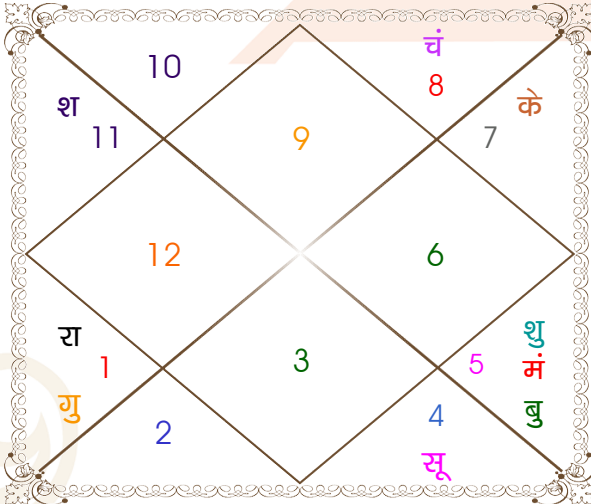
### निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	धनु	01:03:45
2	मकर	03:33:43
3	कुम्भ	08:56:22
4	मीन	13:08:55
5	मेष	12:38:21
6	वृष	07:45:43
7	मिथुन	01:03:45
8	कर्क	03:33:43
9	सिंह	08:56:22
10	कन्या	13:08:55
11	तुला	12:38:21
12	वृश्चिक	07:45:43

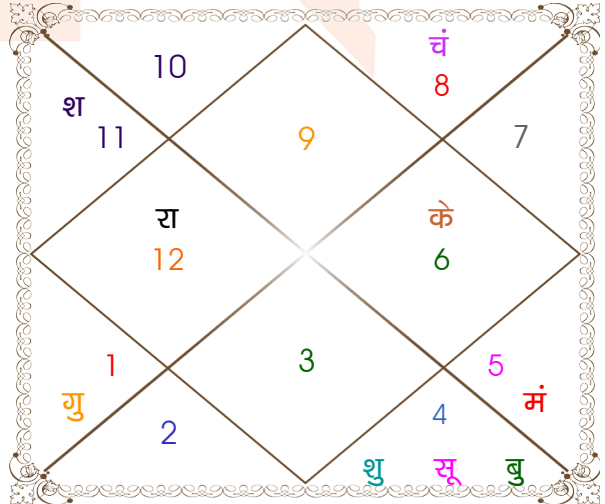
### तारा चक्र

जन्म	सम्पत्	विपत्	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद
उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु
पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा

### चलित कुंडली



### भाव कुंडली



## विंशोत्तरी दशा

### भोग्य दशा काल : शनि 7 वर्ष 4 मास 4 दिन

शनि 19 वर्ष	बुध 17 वर्ष	केतु 7 वर्ष	शुक्र 20 वर्ष	सूर्य 6 वर्ष
28/07/2023	01/12/2030	02/12/2047	01/12/2054	01/12/2074
01/12/2030	02/12/2047	01/12/2054	01/12/2074	01/12/2080
00/00/0000	बुध 29/04/2033	केतु 29/04/2048	शुक्र 02/04/2058	सूर्य 21/03/2075
00/00/0000	केतु 26/04/2034	शुक्र 29/06/2049	सूर्य 02/04/2059	चंद्र 19/09/2075
00/00/0000	शुक्र 24/02/2037	सूर्य 04/11/2049	चंद्र 01/12/2060	मंगल 25/01/2076
00/00/0000	सूर्य 31/12/2037	चंद्र 05/06/2050	मंगल 31/01/2062	राहु 19/12/2076
28/07/2023	चंद्र 02/06/2039	मंगल 01/11/2050	राहु 31/01/2065	गुरु 07/10/2077
चंद्र 04/06/2024	मंगल 29/05/2040	राहु 19/11/2051	गुरु 02/10/2067	शनि 19/09/2078
मंगल 14/07/2025	राहु 16/12/2042	गुरु 25/10/2052	शनि 01/12/2070	बुध 27/07/2079
राहु 20/05/2028	गुरु 23/03/2045	शनि 04/12/2053	बुध 01/10/2073	केतु 02/12/2079
गुरु 01/12/2030	शनि 02/12/2047	बुध 01/12/2054	केतु 01/12/2074	शुक्र 01/12/2080

चंद्र 10 वर्ष	मंगल 7 वर्ष	राहु 18 वर्ष	गुरु 16 वर्ष	शनि 19 वर्ष
01/12/2080	01/12/2090	01/12/2097	03/12/2115	03/12/2131
01/12/2090	01/12/2097	03/12/2115	03/12/2131	00/00/0000
चंद्र 01/10/2081	मंगल 29/04/2091	राहु 14/08/2100	गुरु 20/01/2118	शनि 05/12/2134
मंगल 02/05/2082	राहु 17/05/2092	गुरु 08/01/2103	शनि 02/08/2120	बुध 14/08/2137
राहु 01/11/2083	गुरु 23/04/2093	शनि 14/11/2105	बुध 08/11/2122	केतु 23/09/2138
गुरु 02/03/2085	शनि 02/06/2094	बुध 02/06/2108	केतु 15/10/2123	शुक्र 23/11/2141
शनि 01/10/2086	बुध 30/05/2095	केतु 21/06/2109	शुक्र 15/06/2126	सूर्य 05/11/2142
बुध 02/03/2088	केतु 26/10/2095	शुक्र 20/06/2112	सूर्य 03/04/2127	चंद्र 29/07/2143
केतु 01/10/2088	शुक्र 25/12/2096	सूर्य 15/05/2113	चंद्र 02/08/2128	00/00/0000
शुक्र 02/06/2090	सूर्य 02/05/2097	चंद्र 14/11/2114	मंगल 09/07/2129	00/00/0000
सूर्य 01/12/2090	चंद्र 01/12/2097	मंगल 03/12/2115	राहु 03/12/2131	00/00/0000

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल शनि 7 वर्ष 3 मा 6 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

## विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

<b>शनि - राहु</b> 14/07/2025 20/05/2028	<b>शनि - गुरु</b> 20/05/2028 01/12/2030	<b>बुध - बुध</b> 01/12/2030 29/04/2033	<b>बुध - केतु</b> 29/04/2033 26/04/2034	<b>बुध - शुक्र</b> 26/04/2034 24/02/2037
राहु 17/12/2025 गुरु 05/05/2026 शनि 17/10/2026 बुध 13/03/2027 केतु 13/05/2027 शुक्र 02/11/2027 सूर्य 24/12/2027 चंद्र 20/03/2028 मंगल 20/05/2028	गुरु 20/09/2028 शनि 14/02/2029 बुध 25/06/2029 केतु 18/08/2029 शुक्र 19/01/2030 सूर्य 06/03/2030 चंद्र 22/05/2030 मंगल 15/07/2030 राहु 01/12/2030	बुध 05/04/2031 केतु 26/05/2031 शुक्र 20/10/2031 सूर्य 03/12/2031 चंद्र 14/02/2032 मंगल 05/04/2032 राहु 15/08/2032 गुरु 11/12/2032 शनि 29/04/2033	केतु 20/05/2033 शुक्र 19/07/2033 सूर्य 07/08/2033 चंद्र 06/09/2033 मंगल 27/09/2033 राहु 20/11/2033 गुरु 07/01/2034 शनि 06/03/2034 बुध 26/04/2034	शुक्र 16/10/2034 सूर्य 06/12/2034 चंद्र 03/03/2035 मंगल 02/05/2035 राहु 04/10/2035 गुरु 19/02/2036 शनि 01/08/2036 बुध 26/12/2036 केतु 24/02/2037
<b>बुध - सूर्य</b> 24/02/2037 31/12/2037	<b>बुध - चंद्र</b> 31/12/2037 02/06/2039	<b>बुध - मंगल</b> 02/06/2039 29/05/2040	<b>बुध - राहु</b> 29/05/2040 16/12/2042	<b>बुध - गुरु</b> 16/12/2042 23/03/2045
सूर्य 12/03/2037 चंद्र 06/04/2037 मंगल 24/04/2037 राहु 10/06/2037 गुरु 21/07/2037 शनि 09/09/2037 बुध 23/10/2037 केतु 10/11/2037 शुक्र 31/12/2037	चंद्र 13/02/2038 मंगल 15/03/2038 राहु 31/05/2038 गुरु 08/08/2038 शनि 29/10/2038 बुध 11/01/2039 केतु 10/02/2039 शुक्र 07/05/2039 सूर्य 02/06/2039	मंगल 23/06/2039 राहु 16/08/2039 गुरु 04/10/2039 शनि 30/11/2039 बुध 20/01/2040 केतु 10/02/2040 शुक्र 11/04/2040 सूर्य 29/04/2040 चंद्र 29/05/2040	राहु 16/10/2040 गुरु 17/02/2041 शनि 14/07/2041 बुध 23/11/2041 केतु 17/01/2042 शुक्र 21/06/2042 सूर्य 07/08/2042 चंद्र 23/10/2042 मंगल 16/12/2042	गुरु 06/04/2043 शनि 15/08/2043 बुध 10/12/2043 केतु 28/01/2044 शुक्र 14/06/2044 सूर्य 25/07/2044 चंद्र 02/10/2044 मंगल 19/11/2044 राहु 23/03/2045
<b>बुध - शनि</b> 23/03/2045 02/12/2047	<b>केतु - केतु</b> 02/12/2047 29/04/2048	<b>केतु - शुक्र</b> 29/04/2048 29/06/2049	<b>केतु - सूर्य</b> 29/06/2049 04/11/2049	<b>केतु - चंद्र</b> 04/11/2049 05/06/2050
शनि 26/08/2045 बुध 12/01/2046 केतु 11/03/2046 शुक्र 22/08/2046 सूर्य 10/10/2046 चंद्र 31/12/2046 मंगल 26/02/2047 राहु 23/07/2047 गुरु 02/12/2047	केतु 10/12/2047 शुक्र 04/01/2048 सूर्य 12/01/2048 चंद्र 24/01/2048 मंगल 02/02/2048 राहु 24/02/2048 गुरु 15/03/2048 शनि 08/04/2048 बुध 29/04/2048	शुक्र 09/07/2048 सूर्य 30/07/2048 चंद्र 03/09/2048 मंगल 28/09/2048 राहु 01/12/2048 गुरु 27/01/2049 शनि 05/04/2049 बुध 04/06/2049 केतु 29/06/2049	सूर्य 05/07/2049 चंद्र 16/07/2049 मंगल 23/07/2049 राहु 11/08/2049 गुरु 28/08/2049 शनि 18/09/2049 बुध 06/10/2049 केतु 13/10/2049 शुक्र 04/11/2049	चंद्र 21/11/2049 मंगल 04/12/2049 राहु 05/01/2050 गुरु 02/02/2050 शनि 08/03/2050 बुध 07/04/2050 केतु 20/04/2050 शुक्र 25/05/2050 सूर्य 05/06/2050

## शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांको से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

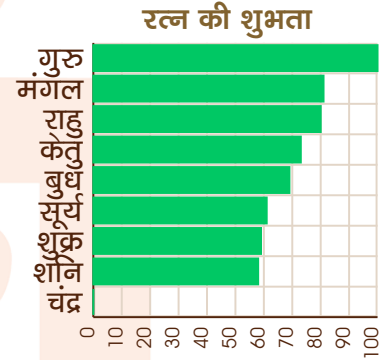
मूलांक	1
भाग्यांक	6
मित्र अंक	1, 4, 8, 9, 6
शत्रु अंक	3, 5,
शुभ वर्ष	19,28,37,46,55
शुभ दिन	रवि, गुरु, मंगल
शुभ ग्रह	सूर्य, गुरु, मंगल
मित्र राशि	कर्क, सिंह
मित्र लग्न	मीन, सिंह, तुला
अनुकूल देवता	शिव
शुभ रत्न	पुखराज
शुभ उपरत्न	सुनहला, पीला हकीक
भाग्य रत्न	माणिक्य
शुभ धातु	कांसा
शुभ रंग	पीत
शुभ दिशा	पूर्वोत्तर
शुभ समय	संध्या
दान पदार्थ	हल्दी, पुस्तक, पीत पुष्प
दान अन्न	दाल चना
दान द्रव्य	घी

## रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
पुखराज	गुरु	100%	सन्तति सुख, स्वास्थ्य, सुख
मूंगा	मंगल	81%	भाग्योदय, सन्तति सुख, कम खर्च
गोमेद	राहु	80%	सन्तति सुख, भाग्योदय
लहसुनिया	केतु	73%	धनार्जन, भाग्योदय
पन्ना	बुध	69%	भाग्योदय, दम्पति, व्यावसायिक उन्नति
माणिक्य	सूर्य	61%	दुर्घटना से बचाव, भाग्योदय
हीरा	शुक्र	59%	भाग्योदय, शत्रु व रोग मुक्ति, धनार्जन
नीलम	शनि	58%	पराक्रम, धन
मोती	चंद्र	0%	व्यय, दुर्घटना



### दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
शनि	01/12/2030	47%	0%	69%	75%	100%	66%	71%	86%	61%
बुध	02/12/2047	67%	0%	81%	81%	100%	66%	58%	80%	73%
केतु	01/12/2054	47%	0%	88%	69%	100%	66%	41%	67%	86%
शुक्र	01/12/2074	47%	0%	81%	75%	100%	72%	64%	86%	80%
सूर्य	01/12/2080	73%	0%	88%	69%	100%	44%	41%	67%	61%
चंद्र	01/12/2090	67%	0%	81%	75%	100%	59%	58%	67%	61%
मंगल	01/12/2097	67%	0%	94%	56%	100%	59%	58%	67%	80%
राहु	03/12/2115	47%	0%	69%	69%	100%	66%	64%	92%	61%
गुरु	03/12/2131	67%	0%	88%	56%	100%	44%	58%	80%	73%

## साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

### प्रथम चक्र:

चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	28/07/2023-29/03/2025	-----	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	31/05/2032-13/07/2034	-----	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	28/01/2041-06/02/2041	26/09/2041-11/12/2043	23/06/2044-30/08/2044
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	11/12/2043-23/06/2044	30/08/2044-08/12/2046	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	08/12/2046-06/03/2049	10/07/2049-04/12/2049	-----

### द्वितीय चक्र:

चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	25/02/2052-14/05/2054	02/09/2054-05/02/2055	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	11/07/2061-13/02/2062	07/03/2062-24/08/2063	06/02/2064-09/05/2064
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	04/11/2070-05/02/2073	31/03/2073-23/10/2073	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	05/02/2073-31/03/2073	23/10/2073-16/01/2076	11/07/2076-11/10/2076
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	16/01/2076-11/07/2076	11/10/2076-15/01/2079	-----

### तृतीय चक्र:

चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	12/04/2081-03/08/2081	07/01/2082-20/03/2084	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	19/09/2090-25/10/2090	21/05/2091-02/07/2093	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	26/12/2099-17/03/2100	16/09/2100-03/12/2102	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	03/12/2102-29/11/2105	-----	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	29/11/2105-25/02/2108	29/07/2108-23/11/2108	-----

### शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	शुभ	पराक्रम
अष्टम स्थानस्थ ढैया	शुभ	दम्पति
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	शुभ	धनार्जन
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	अशुभ	व्यय
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	सम	स्वास्थ्य

## साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

**ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।**

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।  
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

**ॐ हों जूं सः ॐ भूर्भुव स्वः ॐ ।।**

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डेंट बनाकर धारण करें।

**ॐ शं शनैश्चराय नमः ।**

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

## मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।  
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

\*\*\*\*\*

आपकी जन्म कुंडली में मंगल की स्थिति नवम भाव में स्थित है। यह भाव भाग्य एवं धर्म का प्रतिनिधि भाव है। अतः इसके प्रभाव से आप भाग्य पर अल्प मात्रा में ही विश्वास करेंगे तथा कर्म पर विशेष ध्यान देंगे। आपके विचार से कर्म के बिना भाग्य का उदय नहीं होता अतः अपने इस सिद्धांत से आप जीवन में कर्म के द्वारा उन्नति मार्ग प्रशस्त करने में सफल रहेंगे। साथ ही धर्म के प्रति आपकी रुचि अल्प मात्रा में रहेगी तथा धार्मिक कार्य कलापों एवं तीर्थ स्थानों की यात्रा आदि को भी कम ही करेंगे। आयु के साथ साथ आप जीवन में इनके महत्व को भी अवश्य स्वीकार करेंगे। आपको समाज में विशिष्ट सम्मान भी प्राप्त होगा लेकिन इसमें विलम्ब हो सकता है। आप एक पराकमी एवं उत्साही व्यक्ति हैं अतः आपको इस ओर से कोई चिन्ता नहीं होगी।

नवम भाव से द्वादश भाव पर मंगल की चतुर्थ दृष्टि के प्रभाव से आपका व्यय अधिक रहेगा साथ ही शुभाशुभ कार्यों पर आप व्यय करेंगे। जमीन जायदाद पर अधिक से अधिक व्यय करने के इच्छुक रहेंगे इससे आपको प्रचुर मात्रा में लाभ की प्राप्ति हो सकती है। यद्यपि इसके प्रभाव से जीवन में अनावश्यक विघ्न बाधाएं भी आएंगी परन्तु उनका सामना तथा समाधान करने में आप समर्थ रहेंगे। साथ ही दाम्पत्य जीवन का आप सुख पूर्वक उपभोग करेंगे। तृतीय भाव पर मंगल की दृष्टि से आपके पराकम में वृद्धि होगी तथा समाज में सभी लोग आपके पराकम से प्रभावित रहेंगे जिससे आपको इच्छित मान सम्मान की प्राप्ति होगी। साथ ही भाई बहनों का भी न्यूनाधिक सहयोग मिलता रहेगा। चतुर्थ भाव पर इसकी दृष्टि के प्रभाव से आप जमीन जायदाद तथा वाहन आदि से युक्त रहेंगे तथा सुख पूर्वक इनका उपभोग करेंगे। इसके अतिरिक्त अन्य सांसारिक सुख संसाधनों की भी आपको परिश्रम पूर्वक प्राप्ति होगी परन्तु माता का सुख एवं स्वास्थ्य मध्यम रहेगा।

इस प्रकार मंगल के इस प्रभाव से आप कर्म योगी रहेंगे तथा परिश्रम एवं पराक्रम से अपने सांसारिक कार्यों को सम्पन्न करके भाग्योदय करेंगे। आपका दाम्पत्य जीवन सामान्यतया सुखी रहेगा तथा पारिवारिक जन भी आपसे सन्तुष्ट रहेंगे। आप भी उचित रूप से उनका लालन पालन करेंगे। साथ ही आपसी संबंधों में मधुरता भी बनी रहेगी।



## कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।  
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग ।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलाब्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलाब्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

### जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

# पितृदोष विचार

## पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरान्त पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

## पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

### पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

### पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

**ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।**

**नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ॥**

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

### **पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :**

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृ का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

### **आपकी कुण्डली में पितृदोष**

- पंचम भाव में राहु स्थित है एवं शनि से दृष्ट है।
- पंचम भाव के स्वामी पर शनि और राहु का प्रभाव है।
- लग्नेश शनि व राहु दोनों से प्रभावित है।

आपकी कुण्डली में मंगल, गुरु और राहु के कारण पितृदोष है।

आपकी कुण्डली में मंगल पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पुरुष सदस्य द्वारा क्रोधवश किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ आपको नौकर, छोटे भाईयों को दान देना चाहिए।

आपकी कुण्डली में वृहस्पति पितृदोष कारक ग्रह है अतः दादाजी द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ आप विद्वानजनों, वृद्ध ब्राह्मण और पति को दान दें। विद्यालय में पुस्तकों का दान करें।

आपकी कुण्डली में राहु पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पूर्वज द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ शनिवार गाय को सवा

पांच किलो जौ सवा किलो गुड़ में मिलाकर खिलाना चाहिए। सूखे गोले में पंजीरी भरकर काले कपड़े में लपेटकर किसी सुनसान जगह पर मिट्टी में दबाएं। कबूतरों को दाना, चींटी को आटा तथा मछलियों को आटे की गोली बनाकर खिलायें।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

### नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह सूर्यबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

## ग्रह फल

### सूर्य

अष्टमभाव में सूर्य हो तो जातक धैर्यहीन, निबुद्धि, सुखी, धनी, क्रोधी, चिन्तायुक्त एवं पित्तरोगी होता है।

कर्कराशि में रवि हो तो जातक कीर्तिमान, लब्धप्रतिष्ठ, कार्यपरायण, चंचल, साम्यवादी, कफरोगी, इतिहासज्ञ एवं परोपकारी होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य की स्थिति अष्टम भाव में है अतः आपके पिता का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक रूप से वे कष्टानुभूति करेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह भाव रहेगा तथा जीवन में वे धन धान्य से परिपूर्ण रहेंगे एवं आपको समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे यदा कदा आप उनसे विशेष धन या सम्पत्ति भी अर्जित कर सकेंगे। साथ ही यात्रा एवं व्यापार संबंधी कार्यों में भी आपको सहयोग एवं निर्देश प्रदान करेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान का भाव रहेगा एवं समय समय पर उनकी आज्ञा का आप पालन करते रहेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा आपसी मतभेदों से इसमें कटुता या तनाव का वातावरण भी होगा परन्तु यह अल्प समय के लिए होगा। इसके साथ ही जीवन में आप सर्वप्रकार से पिता को सहयोग देंगे एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार से कष्ट नहीं होने देंगे।

### चन्द्र

बारहवें भाव में चन्द्रमा हो तो जातक मृदुभाषी, चिन्ताशील, एकात्प्रिय, क्रोधी, कफरोगी, चंचल, नेत्ररोगी एवं अधिक व्यय करने वाला होता है।

वृश्चिक राशि में चन्द्रमा हो तो जातक अपने माता-पिता, भाइयों आदि से अलग रहने वाला, नास्तिक, लोभी, बन्धुहीन, परस्त्रीरत, झगड़ालू, स्पष्ट वक्ता, बुरे विचार रखने वाले, दुःखी, हठी, अनैतिक विचारों वाला एवं धनी होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति द्वादश भाव में है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य सामान्य अच्छा रहेगा तथा यदा कदा कष्टों का भी सामना करना पड़ेगा। लेकिन आपके प्रति उनके मन में वात्सल्य का भाव रहेगा तथा जीवन में आपको प्रायः यथाशक्ति अपना सहयोग प्रदान करती रहेंगी। आप उनसे अच्छे तथा पुण्य के कार्यों के प्रति प्रवृत्त होंगे तथा समयानुसार दानादि को भी उन्हीं के कथनानुसार सम्पन्न करेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति आदर का भाव रहेगा एवं उनकी आज्ञा का पालन आप कुछ अवसरों को छोड़कर करते रहेंगे। आपके परस्पर संबंध विशेष मधुर नहीं होंगे क्योंकि आप में काफी मतभेद रहेंगे तथापि सांसारिक संबंधों में कोई तनाव नहीं रहेगा एवं सामंजस्य पूर्वक आप के परस्पर व्यवहार चलते रहेंगे। साथ ही उन्हें कष्ट के समय आप अपनी ओर से

पूर्ण सहयोग तथा सहायता अवश्य प्रदान करेंगे।

### मंगल

नौवें भाव में मंगल हो तो जातक अभिमानी, क्रोधी, नेता, द्वेषी, अल्पलाभ करने वाला, यशस्वी, असन्तुष्ट, भातृविरोधी, अधिकारी एवं ईर्ष्यालु होता है।

सिंह राशि में मंगल हो तो जातक शूरवीर, सदाचारी, कार्यनिपुण, स्नेहशील, परोपकारी, ज्योतिषी, गणितज्ञ, माता-पिता का आज्ञाकारी, गुरुजनों का आदर करने वाला, उदार एवं सफल होता है।

आपके जन्म समय में मंगल नवम भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा लेकिन यदा कदा शारीरिक रूप से व्याकुलता की अनुभूति भी करेंगे। आपके प्रति उनका अपनत्व रहेगा एवं जीवन के सुख दुःख में आपका नित्य सहयोग करते रहेंगे। इसके साथ ही आपकी भाग्योन्नति में भी वे वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार की सहायता अवश्य प्रदान करेंगे। धन सम्पत्ति का उनके पास अभाव नहीं रहेगा तथा इससे वे युक्त रहेंगे।

आप भी उनको हृदय से स्नेह एवं सम्मान प्रदान करेंगे एवं सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में उनको अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। आपके आपसी संबंधों में मधुरता रहेगी परन्तु यदा कदा आपसी सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण उनमें कटुता भी आएगी लेकिन यह अस्थायी रहेगी। इसके साथ ही उनकी भाग्योन्नति में भी आप समयानुसार आर्थिक या अन्य प्रकार से अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे एवं सुख दुःख में उनका पूर्ण साथ देंगे।

### बुध

नवमभाव में बुध हो तो जातक विद्वान् लेखक, ज्योतिषी, धर्मभीरु, व्यवसाय प्रिय, भाग्यवान्, सम्पादक, गवैया, कवि एवं सदाचारी होता है।

सिंह राशि में बुध हो तो जातक मिथ्याभाषी, कुकर्मी, ठग, कामुक, भ्रमणशील, अभिमानी, वक्ता, कम उम्र में विवाह, आवेशपूर्ण स्वभाव एवं सरकारी नौकर होता है।

### गुरु

पंचमभाव में गुरु हो तो जातक नीतिविशारद, सन्ततिवान्, सटटे से धन प्राप्त करने वाला, कुलश्रेष्ठ, लोकप्रिय, कुटुम्ब में सबसे ऊँचा स्थान, ज्योतिषी एवं आस्तिक होता है।

मेष राशि में गुरु हो तो जातक ऐश्वर्यशाली, तेजस्वी, वकील, वादी, प्रसिद्ध, कीर्तिमान, विजयी, उस्वभाव, धनी, विद्वान्, प्रचुर सन्तान, उदार, नम्रभाषी परन्तु अपने आपको दूसरों से उच्च समझने वाला, सुखी विवाहित जीवन एवं उच्चपद पर आसीन होता है।

## शुक्र

नवम भाव में शुक्र हो तो जातक धर्मात्मा, राजप्रिय, पवित्रतीर्थ यात्राओं का कर्ता, दयालु, प्रेमी, गृहसुखी, गुणी, चतुर एवं आस्तिक होता है।

सिंह राशि में शुक्र हो तो जातक, अल्पसुखी उपकारी, चिन्तातुर, शिल्पज्ञ, स्त्रियों के द्वारा धन अर्जित करने वाला, कामुक, आवेशपूर्ण एवं अपने को दूसरों से ऊँचा समझने वाला होता है।

## शनि

तृतीय भाव में शनि हो तो जातक नीरोगी, विद्वान् योगी, मल्ल, शीघ्रकार्यकर्ता, सभाचतुर, चंचल, भाग्यवान्, शत्रुहन्ता, एवं विवेकी होता है।

कुम्भ राशि में शनि हो तो जातक नीतिदक्ष, कुशा बुद्धि, शक्तिशाली शत्रु, योग्य, सुखी, व्यसनी, नास्तिक एवं परिश्रमी होता है।

## राहु

पंचम भाव में राहु हो तो जातक शास्त्रप्रिय, कार्यकर्ता, भाग्यवान्, उदररोगी, मतिमन्द, कुल धननाशक, धनहीन, नीतिदक्ष एवं सन्तान के लिए अशुभ होता है।

मेष राशि में राहु हो तो जातक-पराक्रमहीन, आलसी, अविवेकी एवं अनैतिक चरित्र होता है।

## केतु

ग्यारहवें भाव में केतु हो तो जातक बुद्धिहीन, निजका हानिकर्ता, अरिष्टनाशक एवं वातरोगी होता है।

तुला राशि में केतु हो तो जातक कृष्टरोगी, दुःखी, क्रोधी एवं कामी होता है।

## दशा विश्लेषण

महादशा :- शनि  
( 28/07/2023 - 01/12/2030 )

शनि की महादशा की अवधि 19 वर्ष है। आपकी कुण्डली में यह 28/07/2023 को आरम्भ और 01/12/2030 को समाप्त होगी।

शनि आपकी कुण्डली में तृतीय भाव में स्थित है। यह स्वभाव से एक अशुभ ग्रह है और फल की प्राप्ति में विलम्ब और बाधा करता है। फल प्राप्ति की दिशा में यह जातक को कठिन परिश्रम के लिए प्रेरित कर उसके धैर्य की परीक्षा लेता है, किन्तु जातक को अन्ततः लक्ष्य की प्राप्ति होती है। अतः यह एक 'कार्मिक' ग्रह है। तृतीय भाव में स्थित इस ग्रह की दृष्टि आपकी जन्मकुण्डली के पांचवें, नवें और बारहवें भाव पर है और इन भावों पर इसका प्रभाव है। तृतीय भाव, जिसमें यह स्थित है, मानसिक अभिरुचि, बुद्धि, साहस, पराक्रम, छोटी यात्रा, संप्रेषण, हाथ, गले, बाँह तथा स्नायु-तंत्र का द्योतक है।

स्वास्थ्य :

साहस तथा पराक्रम के तृतीय भाव में स्थित महादशा स्वामी शनि अपने भाव को शक्ति प्रदान करता है। इसलिए इस दशा के दौरान आप स्वयं को साहसी और बहादुर अनुभव करेंगे और आपको कोई गम्भीर बीमारी अथवा स्वास्थ्य समस्या नहीं होगी।

धन-सम्पत्ति :

शनि तृतीय अर्थात् साहस, बुद्धि और अभिरुचि के भाव में स्थित है। फलतः आपको चल-अचल सम्पत्ति में वृद्धि करने के अनेक अवसर मिलेंगे। आपके ऋणों का भुगतान होगा और आप आराम व विलास की वस्तुओं पर व्यय करेंगे।

व्यवसाय :

बहादुर तथा साहसी होने के कारण आप तरंगी तथा निर्मम होंगे। आप स्थानीय बोर्ड, नगर निगम आदि के प्रधान या अध्यक्ष हो सकते हैं। आपको सफलता मिलने में कठिनाई होगी और लक्ष्य प्राप्ति में बाधाएं आएंगी।

पारिवारिक जीवन :

आपका पारिवारिक जीवन उत्तम और सद्भाव पूर्ण होगा। आपके जीवनसाथी आपका सहयोग करेंगे। किन्तु, आपके भाई-बहन समस्याएं और कठिनाइयाँ खड़ी करेंगे जिनका सामना आप साहसपूर्वक करेंगे।

शिक्षा/प्रशिक्षण :

उच्च शिक्षा तथा साहित्यिक वृत्ति के विकास के लिए दशा अनुकूल है।



एक्स-35, ओखला फेज-2, नई दिल्ली-110020 फोन:- 011-40541000, 40541020  
Web: [www.futurepointindia.com](http://www.futurepointindia.com), e-mail: [mail@futurepointindia.com](mailto:mail@futurepointindia.com)

**महादशा :- बुध  
( 01/12/2030 - 02/12/2047 )**

बुध की महादशा 01/12/2030 को आरम्भ होगी और 17 वर्ष की होकर 02/12/2047 को समाप्त होगी। आपकी जन्मकुण्डली में बुध नवम भाव में स्थित है। इसके पूर्व आपकी 19 वर्ष की शनि दशा चला रही थी। शनि के कारण आपको जीवन का सुख और बच्चों से आनन्द मिला होगा और शिक्षा उत्तम हुई होगी। बुध की वर्तमान दशा में आपकी दूर की यात्रा तथा उच्च शिक्षा होगी और सम्पत्ति तथा समृद्धि की प्राप्ति होगी।

**स्वास्थ्य :**

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आप में शक्ति, स्फूर्ति और उत्साह रहेगा और आप हमेशा सक्रिय रहेंगे। आप खुश तथा आशावादी रहेंगे। मौसम में परिवर्तन के कारण ज्वर, विषाणुजन्य संक्रामक बीमारी, चर्मरोग, स्नायविक-थकावट तथा वात की हल्की शिकायत हो सकती है। इन मामूली बीमारियों को छोड़ आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा।

**अर्थ और व्यवसाय :**

इस दशा के दौरान आपकी आर्थिक स्थिति अत्यन्त मजबूत होगी। व्यवसाय-व्यापार से उपार्जन में वृद्धि होगी। विदेश से लाभ हो सकता है। सट्टे से लाभ होगा, पिता से लाभ मिलेगा। जीविका तथा व्यवसाय के लिये लेखा, पत्रकारिता, शिक्षण, तथा सभी बौद्धिक कार्यों का चयन कर सकते हैं। सूती कपड़ा, रत्न, पुस्तक, लेखन-सामग्री, कम्प्यूटर या हाथ से बनी वस्तुओं का व्यापार लाभदायक हो सकता है। नौकरीपेशा लोगों के जीविकोपार्जन में सफलता तथा आय में वृद्धि होगी और सहकर्मियों का अनुग्रह प्राप्त होता। आपको विदेश तथा ठेके से लाभ होगा। व्यवसाय-व्यापार से जुड़े लोगों को विरोधियों पर विजय और सभी कार्यों में सफलता मिलेगी तथा रोजगार और व्यापार में विस्तार के नये अवसर मिलेंगे। व्यापार या विदेश से कारोबार में वृद्धि होगी। अर्थ तथा व्यवसाय में स्थिरता और प्रगति के लिए यह दशा उत्तम है।

**वाहन, यात्रा, जमीन-जायदाद :**

इस दशा के दौरान आपको जीवन का सुख मिलेगा और आप भाग्यशाली होंगे। शनि की अन्तर्दशा के दौरान वाहन-सुख तथा सभी प्रकार का आराम मिलेगा। जमीन-जायदाद के सभी लेन-देन लाभदायक होंगे। गुरु की अन्तर्दशा में आपकी छोटी यात्रा और बुध की अन्तर्दशा में लम्बी यात्रा होगी जो अति उत्तम तथा लाभदायक सिद्ध होगी। आप तीर्थाटन पर जाएंगे या धर्मस्थलों की यात्रा करेंगे।

**शिक्षा :**

इस दशा में आपकी शिक्षा अति उत्तम होगी। आप उच्च शिक्षा प्राप्त करेंगे और अपनी पसन्द की संस्था में शिक्षा ग्रहण करेंगे। आप अपनी सभी परीक्षाओं और साक्षात्कारों में सफल होंगे। आप विज्ञान, गणित तथा वाणिज्य में अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करेंगे। इस दशा के दौरान आपकी शिक्षा विदेश में हो सकती है। लेखा, वाणिज्य, साहित्य, कम्प्यूटर विज्ञान, रचनात्मक पत्रकारिता, मीडिया, जन संचार आदि में आपकी रुचि होगी। आप प्रतिभाशाली,

कूटनीतिक, तथा बहुमुखी हैं और विभिन्न विषयों में आपकी रुचि है। आपका दिमाग विवेकपूर्ण तथा विश्लेषणात्मक है और सभी बौद्धिक कार्यों में अच्छा करेंगे।

परिवार :

आपको बच्चों से सुख मिलेगा। आपके जीवन साथी को संबंधियों से सहायता, शत्रुओं और विरोधियों पर विजय तथा सम्मान मिलेगा और उनकी यात्रा तथा प्रगति होगी। आपके पिता को यश, ख्याति तथा धन की प्राप्ति तथा यात्रा होगी। आपके छोटे भाई-बहनों को साझेदारों से लाभ, यात्रा तथा व्यापार में सफलता मिलेगी जबकि बड़ों को हर प्रकार का लाभ मिलेगा, उनके मित्र प्रभावशाली होंगे और उनकी इच्छाओं की पूर्ति होगी। भाई-बहनों के साथ आपका सम्बन्ध उत्तम रहेगा। आप भाग्यशाली हैं। इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, धन तथा पिता से लाभ मिलेगा और अध्यात्म की ओर आपका झुकाव होगा।

अन्तर दशा :

बुध की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपको यश, ख्याति तथा सुख मिलेगा। केतु कुछ समस्याएं उत्पन्न कर सकता है। शुक्र की अन्तर्दशा में यश, ख्याति तथा सम्पत्ति की प्राप्ति होगी और स्वास्थ्य उत्तम रहेगा जबकि चन्द्र की अन्तर्दशा में जीवन-वृत्ति में उन्नति मिलेगी। मंगल की अन्तर्दशा के दौरान व्यापार तथा साझेदारों से लाभ मिलेगा जबकि राहु की अन्तर्दशा में कुछ समस्याएं उत्पन्न हो सकती हैं। गुरु की अन्तर्दशा में आपकी छोटी यात्रा तथा मामूली स्वास्थ्य समस्याएं हो सकती हैं जबकि शनि की अन्तर्दशा में शक्ति, अधिकार, यश और ख्याति की प्राप्ति होगी।

**अंतर्दशा :- बुध - बुध  
( 01/12/2030 - 29/04/2033 )**

आपके लिए बुध की महादशा 01/12/2030 को प्रारंभ हो रही है। इस महादशा में पहली अंतर्दशा बुध की होगी जिसकी अवधि 2 वर्ष 4 मास 27 दिन होगी। आपके लिए यह 01/12/2030 को प्रारंभ होकर 29/04/2033 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बुध बुद्धिमत्ता, स्मृति और वाणी का कारक है।

इस अवधि में आपको उच्च शिक्षा में प्रवेश मिल सकता है। दर्शनशास्त्र में रुचि हो सकती है। धार्मिक या शैक्षणिक यात्रा से लाभ हो सकता है। विदेश से संपर्क भी लाभदायक हो सकता है। विज्ञान में दक्ष हो सकते हैं। पिता से संबंध मधुर रहेंगे। छोटे भाई-बहनों से लाभदायक और मधुर संबंध रहेंगे। महत्वपूर्ण फैसले करेंगे। व्यापार से लाभ होगा।

आपके जीवनसाथी की लघु यात्राएं हो सकती हैं। आपके पिता को उच्चपद, प्रसिद्धि और ज्ञान-विज्ञान में सफलता मिलेंगी। माता का स्वास्थ्य उत्तम होगा; प्रगति में बाधा आ सकती है। आपके भाई-बहनों के लिए साझेदारी से लाभ, व्यापार में सफलता, नये व्यापार की शुरुआत, इच्छाओं की पूर्ति, सब सुख-सुविधाओं और विभिन्न माध्यमों से धनागम का संकेत है।

आपकी संतान शिक्षा में सफल रहेगी, प्रसिद्धि मिलेगी। अगर वे कार्यरत हैं तो निवेश और सट्टेबाजी से लाभ होगा, उच्च पद प्राप्त होगा।

अगर आप कार्यरत हैं तो भूतकाल में किये परिश्रम से लाभ होगा। परामर्शदाताओं के खर्चे बढ़ेंगे, लोग सहयोग करेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। अरिष्ट से बचाव के लिए मूंग की दाल दान में दें।